अलवर जिले (ग्रामीण) में मानव संसाधान विकास

[1]राजेश प्रसाद पालीवाल [2]डॉ. नरेन्द्र सिंह यादव
[1]शोधार्थी, सह आचार्य
[1]भूगोल विभाग, [2]भूगोल विभाग
[1]राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर,
[2]बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर[2]

सारांश (Abstract):
मानव संसाधन अवधारणा के अन्तर्गत किसी क्षेत्र की जनसंख्या को वहाँ की अर्थव्यवथा की परिसम्पत्ति के रूप में देखा जाता है। प्राचीनकाल में महान विचारक अरस्तु ने भी राज्य के स्तम्भ के रूप में जनसंख्या को एक प्रमुख तत्व माना है। किसी भी देश या क्षेत्र का विकास वहाँ की मानव संसाधन पर ही निर्भर करता है। यदि मानव विकसित अवस्था में होगा तो वहाँ उपलब्ध अन्य संसाधनों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग कर सकेगा तथा विकास की रफ्तार को तेज कर सकेगा। अतः किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन एवं नियोजन के लिए विकसित मानव संसाधन का होना बहुत जरूरी है। अतः मानव समस्त संसाधनों का उत्पादक तथा उपभोक्ता है, जो कि स्वयं एक प्रमुख संसाधन भी है। जनसंख्या को ज्ञान शिक्षा, जागरूकता आदि के द्वारा विकसित मानव संसाधन बनाने का प्रयास किया जाता है। यह अध्ययन जिले के ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं का अनुसंधान एवं विश्लेषण का एक प्रयत्न है, ताकि जिले के मानव संसाधन विकास को समझा जा सके।

मुख्य शब्द : मानव संसाधन, जनसंख्या वृद्धि, वितरण, घनत्व, साक्षरता।

प्रस्तावना :

किसी क्षेत्र के समग्र विकास में वहाँ के मानव संसाधन का सबसे बड़ा योगदान होता है। मानव अपनी शिक्षा, तकनीकी, ज्ञान, विज्ञान का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर रहा है, जिससे सांस्कृतिक पर्यावरण का जन्म होता है। किसी क्षेत्र का विकसित सांस्कृतिक पर्यावरण, वहाँ के उच्च मानव संसाधन विकास के बारे में बताता है। अतः किसी क्षेत्र के जनसंख्या वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, कार्यशील जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक है, ताकि वहाँ के सांस्कृतिक पर्यावरण एवं मानव संसाधन विकास के बारे में जानकारी हो सके। विश्व में कुल जनसंख्या के दृष्टिकोण से भारत का दूसरा स्थान है। उन्नत शिक्षा, तकनीकी, उच्च बौद्धिक क्षमता के द्वारा भारत अपनी कुल जनसंख्या को एक अच्छी परिसम्पत्ति बनाने की ओर अग्रसर है। अतः धीरे–धीरे ज्ञान–विज्ञान के द्वारा भारत अपने मानव संसाधन को बेहतर बनाने की ओर अग्रसर है।

शोध पत्र का उद्देश्य –

जिले के ग्रामीण क्षेत्र के मानव संसाधन की वर्ष 2011 के आधार पर समीक्षा करना है।

साहित्यावलोकन –

डॉ. एस.डी. मौर्य (2016) ने अपनी पुस्तक 'संसाधन भूगोल' प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद में संसाधनों के नियोजन संरक्षण एवं प्रबंधन की आवश्यकताओं पर बल दिया है।

डॉ. बी.सी. मेहता (2006) ने अपने शोध प्रबध "Regional Population Growth : A Case Study of Rajasthan" में क्षेत्र की जनांकिकी संरचना का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

आर.एन.सिंह एवं आर.पी. चतुर्वेदी ने "Dynamic of Population Growth Bundelkhand Region, A Case Study" में क्षेत्र की जनांकिकी विशेषता पर प्रकाश डालते हुए मानव संसाधन को उन्नत बनाने के बारे में बताया।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :

अलवर जिला उत्तरी पूर्वी राजस्थान में $27^0 3'$ से $28^0 14'$ उत्तरी अक्षांश एवं $76^0 07'$ से $77^0 13'$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। इसकी उत्तर से दक्षिण दिशा में लम्बाई 137 किमी एवं पूर्व से पश्चिम में चौडाई 110 किमी है। अलवर जिले का कुल क्षेत्रफल 8382 वर्ग किमी है। प्रशासनिक दृष्टि से अलवर जिला 12 तहसीलों – अलवर, बहरोड़, बानसूर, किशनगढ़बास, कोटकासिम, कठूमर, लक्ष्मणगढ़, मुण्डावर, राजगढ़, रामगढ़, तिजारा, थानागाजी शामिल है। 6

नगरपालिका, 01 जिला परिषद, 14 पंचायत समितियां, 472 ग्राम पंचायते 517 पटवार मण्डल तथा 2081 ग्राम स्थित है। वर्ष 1985 में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में अलवर जिले को शामिल कर लिया गया, जिससे अलवर में विकास सम्भावनाएँ बढ़ी है।

जनसंख्या वृद्धि –

जनसंख्या वृद्धि से तात्पर्य है कि समय की कोई विशेष अवधि (जैसे 10 वर्ष) में किसी देश या राज्य के निवासियों की संख्या में परिवर्तन से है। यह परिवर्तन धनात्मक भी हो सकता है, और नकारात्मक भी हो सकता है। अलवर जिले (ग्रामीण) में वर्ष 2011 में कुल जनसंख्या 309728 है। किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि दर उस क्षेत्र की आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रतिफल होती है। जनसंख्या वृद्धि को कुल जनसंख्या एवं प्रतिशत दोनों में व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिशत मूल्य ज्ञात करने के लिए निरपेक्ष वृद्धि को विगत वर्ष की जनगणना से भाग देकर 100 से गुणा किया जाता है। सारणी–1 देखने से स्पष्ट होता है कि 1951 से 1961 के बीच जनसंख्या वृद्धि बहुत अधिक रही, जो कि 1951 में +2.16 प्रतिशत से बढ़कर 1961 में + 26.45 प्रतिशत हो गई जिसका मुख्य कारण देश को स्वतंत्र होने के साथ ही चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि हुई तथा जन्म दर अत्यधिक तथा मृत्युदर का कम रहना रहा है। इसके बाद 1971 में +27.63 प्रतिशत तथा 1991 में +30.82 प्रतिशत तथा 2001 में 30.31 प्रतिशत रही। वर्ष 2011 में यह वृद्धि दर अत्यधिक कम होकर +222.78 प्रतिशत रही, जिसका प्रमुख कारण साक्षरता में वृद्धि जागरूकता में वृद्धि, जन्म दर कम रहना, चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि एवं परिवार नियोजन कार्यक्रम का सफल संचालन रहा है।

सारणी –1

अलवर जिले में दशकीय जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	पुरूष	स्त्री	योग	दशकीय वृद्धि (+) या कमी (–) (कुल जनसंख्या में)	
				संख्या	प्रतिशत
1941	446387	397398	843785	–	–
1951	454557	407436	861993	+18208	+2.16
1961	576234	513792	1090026	+228033	+26.45
1971	737373	653789	1391162	+301136	+27.63
1981	927693	827882	1755575	+364413	+26.19
1991	1221534	1075046	2296580	+541005	+30.82
2001	1586752	140840	2992592	+696012	+30.31
2011	1939026	1735153	3674179	+681587	+22.78

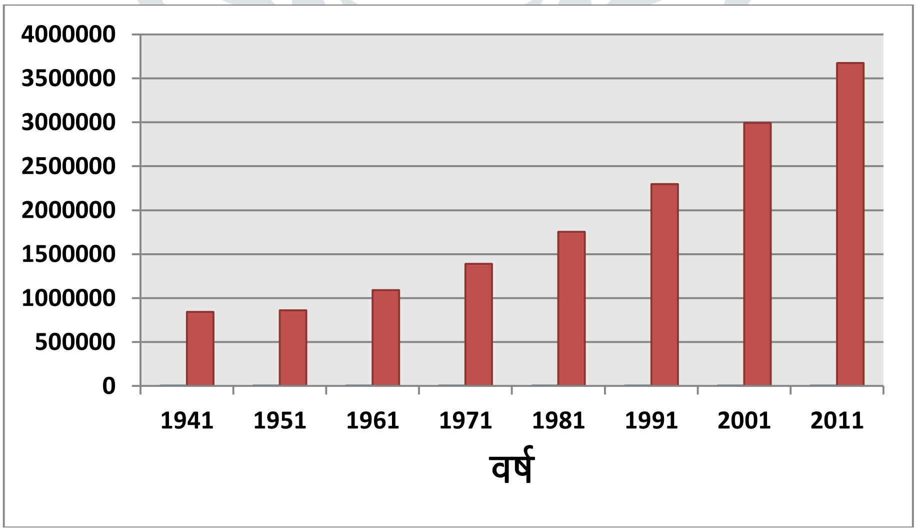

ग्राफ 1 : अलवर जिले में दशकीय जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या वितरण –

भूतल पर जनसंख्या के वितरण में प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल तक परिवर्तन होता रहा है। यद्यपि परिवर्तन की गति एवं दिशा देश व काल के अनुसार बदलती रही है। जहाँ एक ओर मानव निवास के लिए उपयुक्त स्थलखण्डों पर जनसंख्या का अत्यधिक जमाव हो गया है। वहीं दूसरी ओर पृथ्वी के बडे–बडे भूखण्ड मनुष्य के लिए अनुपयुक्त होने से विरान हो गये हैं। जनसंख्या वितरण पर मुख्य रूप से उच्चावच, जलवायु, वनस्पति, आर्थिक संसाधनों का प्रभाव पड़ता है। अलवर जिले में जनसंख्या वितरण को सारणी संख्या 2 में दिखाया गया है। अलवर जिले के 2011 में सर्वाधिक जनसंख्या अलवर तहसील की 355218 रही जबकि सबसे कम कोटकासिम तहसील की 137339 रही है।

अलवर तहसील में अत्यधिक जनसंख्या का मुख्य कारण विभिन्न भौतिक सुविधाए–स्कुल, कॉलेज, चिकित्सालय तथा रोजगार के साधन उपलब्ध होना है, वही कोटकासिम में अत्यधिक कम जनसंख्या का कारण सिंचाई के साधनों की अनुपलब्धता, रोजगार के साधनों का अभाव तथा भौतिक सुविधाओं की कमी होना है।

सारणी –2 अलवर जिले में जनसंख्या वितरण तहसीलवार

वर्ष	तहसील	पुरूष	स्त्री	योग
01	बहरोड़	164380	148357	312737
02	मुण्डावर	121648	109980	231628
03	कोटकासिम	71907	654232	137339
04	तिजारा	135003	122433	257436
05	किशनगढ़बास	78288	72264	150552
06	रामगढ़	127039	116037	243076
07	अलवर	187403	167725	355128
08	बानसूर	138905	124758	263663
09	थानागाजी	122907	110488	233395
10	राजगढ़	174921	155175	330096
11	लक्ष्मणगढ़	145947	131172	277119
12	कठूमर	121160	106399	227559
कुल	अलवर जिला	159508	1430220	3019728

जनसंख्या घनत्व –

जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य कुल भौगोलिक क्षेत्र पर प्रतिवर्ग किमी औसत जनसंख्या से है। भूमि संसाधन सीमित है, जबकि जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। ऐसी परिस्थितियों में भूमि पर जनसंख्या घनत्व को ज्ञात करना आवश्यक है। अलवर जिले में 2011 में जनसंख्या घनत्व 367 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। तहसील स्तर पर सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व कठूमर तहसील में 462 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है, जबकि सबसे कम जनसंख्या घनत्व थानागाजी तहसील का 219 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। कठूमर में उच्च जनघनत्व का प्रमुख कारण सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता तथा प्राथमिक व्यावसाय का विस्तार प्रमुख है जबकि थानागाजी तहसील में कम घनत्व का कारण अरावली पहाड़ी क्षेत्र एवं रोजगार के साधनों का कम होना है।

सारणी – 3

अलवर जिले में जनसंख्या घनत्व (2011)

वर्ष	तहसील	जनसंख्या घनत्व
01	बहरोड़	437
02	मुण्डावर	404
03	कोटकासिम	400
04	तिजारा	425
05	किशनगढ़बास	397

06	रामगढ़	418
07	अलवर	407
08	बानसूर	398
09	थानागाजी	219
10	राजगढ़	236
11	लक्ष्मणगढ़	447
12	कठूमर	462
कुल	अलवर जिला	367

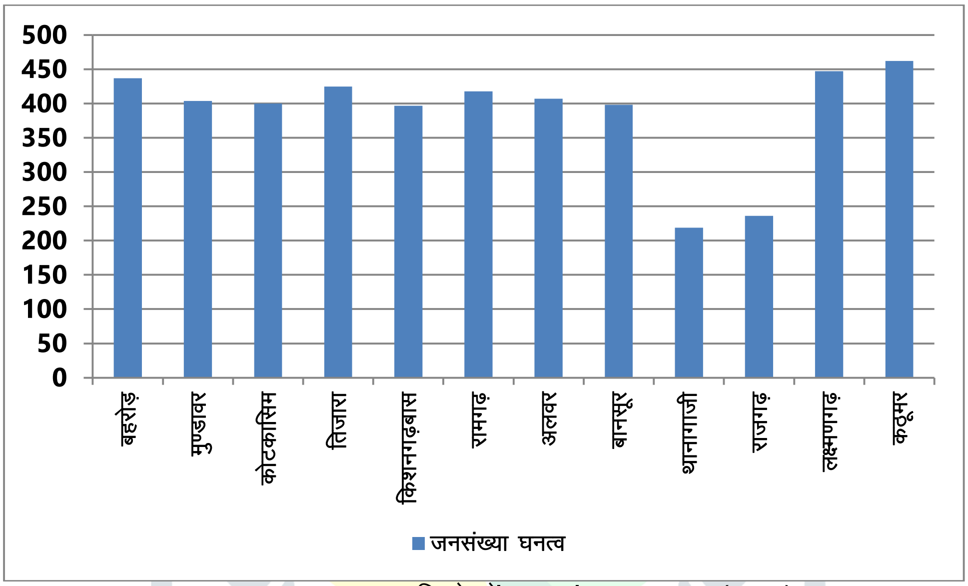

ग्राफ 2 : अलवर जिले में जनसंख्या घनत्व (2011)

साक्षरता –

साक्षरता जनसंख्या की एक गुणात्मक विशेषता है, जो किसी क्षेत्र के सामाजिक व आर्थिक विकास का एक यथार्थ व विश्वसनीय सूचक है। साक्षरता का सामान्य अर्थ में 7 वर्ष या इससे अधिक आयु की जनसंख्या जो किसी भाषा को पढ़ना, लिखना जानता हो साक्षर की श्रेणी में आता है। अलवर जिले में ग्रामीण क्षेत्र में 2011 में सर्वाधिक साक्षरता दर बहरोड़ तहसील (79.12 प्रतिशत) तथा सबसे कम थानागाजी तहसील में (60.29 प्रतिशत) रही है। तथा जिले की साक्षरता दर 67.9 प्रतिशत रही है जो कि सारणी सं. 4 में दिखाई गई है। बहरोड़ में सर्वाधिक साक्षरता का कारण अत्यधिक शैक्षिक संस्थाओं का होना तथा जनता की जागरूकता है तथा थानागाजी में कम साक्षरता का कारण गरीबी, बेरोजगारी है।

सारणी – 4

अलवर जिले में साक्षरता

वर्ष	तहसील	पुरूष	स्त्री	कुल
01	बहरोड़	90.10	66.48	79.12
02	मुण्डावर	88.04	60.54	74.87
03	कोटकासिम	89.44	63.18	76.82
04	तिजारा	77.97	46.29	62.88
05	किशनगढ़बास	80.12	50.80	66.02
06	रामगढ़	77.74	45.45	62.28

07	अलवर	80.05	48.34	65.04
08	बानसूर	80.55	52.72	67.31
09	थानागाजी	75.70	43.02	60.29
10	राजगढ़	81.40	50.00	66.60
11	लक्ष्मणगढ़	80.60	48.05	65.40
12	कठूमर	83.20	52.11	68.60
कुल	अलवर जिला	92.08	52.16	67.90

सारणी – 5
अलवर जिले में लिंगानुपात (2011)

वर्ष	तहसील	लिंगानुपात
01	बहरोड़	903
02	मुण्डावर	904
03	कोटकासिम	910
04	तिजारा	907
05	किशनगढ़बास	923
06	रामगढ़	913
07	अलवर	895
08	बानसूर	899
09	थानागाजी	898
10	राजगढ़	887
11	लक्ष्मणगढ़	889
12	कठूमर	879
कुल	अलवर जिला	900

लिंगानुपात –

किसी भी क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनशीलता को ज्ञात करने में उस क्षेत्र का लिंगानुपात अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लिंगानुपात का तात्पर्य स्त्री–पुरुष अनुपात से है। यह अनुपात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या को बताता है। लड़के के जन्म की अभिलाषा, पुरुष–महिला के जन्म दर में अंतर से लैंगिक अनुपात का जन्म होता है।

वर्ष 2011 में अलवर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में लिंगानुपात 900 है। तहसील स्तर पर सर्वाधिक लिंगानुपात किशनगढ़बास (923) एवं सबसे कम कठूमर तहसील (879) है। लिंगानुपात कम रहने का मुख्य कारण दहेज प्रथा लड़के की अनिवार्यता, एवं अन्य सामाजिक मान्यताए हैं। तहसील स्तर पर लिंगानुपात को सारणी संख्या 5 में दर्शाया गया है।

कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या –

जनांकिकीय स्वरूप में कार्यात्मकमता संरचना एक महत्वपूर्ण पहलू हैं, कार्यात्मक संरचना का तात्पर्य उस जनसंख्या से है, जो किसी वस्तु या सेवा के उत्पाद में लगी होती है। कार्यात्मक जनसंख्या में 15 वर्ष से 65 वर्ष आयु वाली जनसंख्या को सम्मिलित करते है। जबकि 0–14 एवं 65 वर्ष से अधिक आयु वर्ग को अकार्यशील माना जाता है। वर्ष 2011 में सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या कोटकासिम में 54.87 प्रतिशत तथा सर्वाधिक अकार्यशील कोटकासिम में 45. 52 प्रतिशत है। सबसे कम कार्यशील जनसंख्या थानागाजी तहसील में (46.16 प्रतिशत) में है।

सारणी – 6
अलवर जिले में कार्यात्मकता (2011) प्रतिशत में

वर्ष	तहसील	कार्यशील	अकार्यशील
01	बहरोड़	51.35	48.65
02	मुण्डावर	49.00	51.00
03	कोटकासिम	54.48	45.52
04	तिजारा	50.00	50.00
05	किशनगढ़बास	48.00	52.00
06	रामगढ़	48.59	51.41
07	अलवर	50.50	49.50
08	बानसूर	52.24	49.49
09	थानागाजी	46.10	53.84
10	राजगढ़	48.30	51.70
11	लक्ष्मणगढ़	49.26	50.74
12	कठूमर	48.47	51.53
कुल	अलवर जिला	48.28	51.72

निष्कर्ष एवं सुझाव –

यह शोध सुझाव देता है कि मानव संसाधन को अधिक उन्नतशील बनाने के लिए साक्षरता दर, लिंगानुपात, चिकित्सा सुविधा, रोजगार के साधन आदि में तेजी लानी होगी। क्षेत्र में कृषि विकास हेतु सिंचाई के साधनों का विकास करना चाहिए तथा शिक्षा को व्यावसायोन्मुखी बनाया जाना चाहिए। इस हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान खोले जाने चाहिए। वर्तमान में सभी भौतिक आधारभूत सुविधाओं का विकास भविष्य में होने वाली जनसंख्या वृद्धि को ध्यान में रख कर करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. आर.सी. चांदना (2005) – जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. जिला सांख्यिकी रूपरेखा – 2011।
3. जिला जनगणना पुस्तिका – 2011।
4. एस.डी. कौशिक– संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
5. एस.एन. अग्रवाल – India's Population Problem, Mc Graw Hill , New Delhi.
6. पंडा बी.पी. (1988) – जनसंख्या भूगोल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
7. हिरालाल (1989) – जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।

*****